# दंश

**सुमित्रा मेहरोल**
मो. 9650466938

'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' बैंड बाजों की धुन के साथ बजती इस मधुर स्वर लहरी के कारण मालती की आँख खुल गई। भोर होने को थी, उसने खिड़की से बाहर देखा बाहर अभी धुंधलका ही था। सूर्य महाराज ने अपनी रश्मियों को उतरने का आदेश अभी नहीं दिया था।

बगल में पति गहरी नींद में सोए थे। घर के अन्य सदस्यों के इतने सवेरे उठने का तो सवाल ही नहीं उठता या क्या पता बैंड बाजों की आवाज से उनकी भी नींद खुल गई हो। वैसे इतवार है आज, किसी को ऑफिस तो जाना नहीं जाग भी गए होंगे तो करवट बदल फिर सो जाएंगे। एक ही दिन तो मिलता है बेचारे बच्चों को कुछ आराम का, वरना रोज तो जो सुबह के निकलते हैं फिर आने की कुछ खबर नहीं होती। किसी दिन जल्दी आ भी जाएं तो यह मरे फोन घर को भी ऑफिस में तब्दील कर देते हैं वही टारगेट, क्लाइंट, प्रोजेक्ट की बातें, अब प्राइवेट नौकरी में यही सब होगा। सरकारी नौकरी जैसा चैन थोड़े ही है, सरकारी में तो सुबह टाइम पर आए शाम को समय पर ही बैग उठा घर जाने के लिए स्वतंत्र हो। यह सब सोचते -सोचते काफी देर हो गई। सूरज के सुहावने प्रकाश से धीमे-धीमे घर जगमगाने लगा।

बैंड बाजों के स्वर अब थम गए थे, शायद दुल्हन का घर में प्रवेश हो गया होगा। कल उनके पड़ोस में रहने वाले शर्मा जी के बेटे पवन का विवाह था। बारात पास के ही बैंक्विट हॉल में गई थी। शर्मा जी ने साफ-साफ कह दिया था लड़की वालों से कि वह बस में ढोकर बारातियों को अन्यत्र कहीं नहीं ले जाएंगे। जब पास में ही इतना अच्छा बैंक्वेट हाल है तो तुक भी क्या है दूर जाने की, हां थोड़ा महंगा जरूर है पर भाई शादी तो जिंदगी में एक ही बार होनी है सो महंगा सस्ता सब चलता है। पड़ोस के नाते विवाह का न्योता उन्हें भी मिला था पर घुटनों के दर्द के मारे वह तो बारात में जा ना सकी थी और दोनों बेटों को अपने ऑफिस के झंझटों से ही छुटकारा ना था। उनके पति ही बारात में शामिल हुए थे और द्वाराचार के बाद खाना खाकर रात लगभग बारह बजे घर लौट आए थे।

मालती पलंग से उठ खड़ी हुई, पैरों में चप्पल डाल रसोई तक गई। दो गिलास पानी पिया और ड्राइंग रूम का दरवाजा खोल बरामदे में आ गई फिर मुख्य गेट खोल बाहर गली में झांकने लगी। थर्माकोल की जूठी प्लेटों के अंबार, बुझी हुई भट्टी, कटी हुई सब्जियों और फलों के छिलकों के ढेर उनके घर के बिल्कुल सामने स्थान-स्थान पर फैले थे। जूठन पर गली के कुत्ते मुँह मार रहे थे। जूठन के अंबारों से उठती बदबू के भभके ने सुबह की शीतल वायु में जहर घोल दिया।

उनका घर गली के बिल्कुल आखिर में था। उसके बाद गली बंद थी। आसपास किसी के घर कोई भी आयोजन होता तो हलवाई की भट्टी उनके घर के सामने ही लग जाती थी। ऐसे में दिन भर तरह-तरह के व्यंजनों के पकने की खुशबू से उनका घर महक उठता। पहलोपहल मेजबान घर की महिलाओं के भट्टी पूजने की स्वर लहरियों से पूरा माहौल उत्सवमय हो जाता। उन्हें अच्छा लगता यह सब, लगता उन्हीं के घर यह सब आयोजन हो रहा है, पर कार्यक्रम खत्म होने के बाद हलवाई द्वारा छोड़े गए कूड़े कचरे के ढेर, प्याज अदरक लहसुन व तरह-तरह की सब्जियों के छिलके, तेल घी के निशान, जूठे कप गिलास और भी ना जाने क्या-क्या, कई-कई दिन तक उनके द्वार पर पड़े उनकी मुश्किलों में इजाफा करते रहते। गर्मियों में तो कचरे और गंदगी से उठती बदबू और मक्खी मच्छरों से उनकी जान सांसत में आ जाती। अजीब स्थिति होती थी तब, ना उगला जाता था ना निगला। पड़ोसी से कुछ कहने में संकोच होता था कि वह यह ना सोचने लगें कि पड़ोस का इन्हें जरा लिहाज नहीं है शादी ब्याह में यह सब अव्यवस्थाएं तो होती ही रहती हैं, जरा सब्र नहीं है इनको, अरे एक-दो दिन बाद कचरा उठाने वाली आएगी तो ले जाएगी यह सब पर वह एक-दो दिन उनके लिए दूभर हो जाते। कैसे कोई घर के बिल्कुल सामने पड़ी गंदगी और बदबू को बर्दाश्त करे, कई दिन तक बदबू और मच्छरों को सहना असह्य था। बहुत बार किसी को रुपए देकर उन्होंने खुद अपने द्वार पर पड़ी गंदगी उठवाई है, और फिर महरी से द्वार के सामने वाली जगह पर खूब सारा पानी डालकर धुलवाया है।

उसने गली में झांका, कुछ दूर लगे टेंट में बैंड बाजे वाले बैठकर चाय पी रहे थे। शादी वाले घर में आए कुछ रिश्तेदार भी वहां मौजूद थे।

घर के लोग दुल्हन को भीतर ले जा चुके थे। दुल्हन की मुँह - दिखाई के लिए उन्हें भी जाना होगा। घुटनों में दर्द के कारण बारात में चाहे वह जा ना पाई हों पर दुल्हन को आशीर्वाद और शगुन देने तो उन्हें जाना ही चाहिए। पड़ोस का मामला है और दूल्हा पवन कौन पराया है उनके बेटे समान ही तो है। उनके सामने ही तो छोटे से बड़ा हुआ है और अब अपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर रहा है।

आज तो दुल्हन शायद पग फेरे की रस्म के लिए मायके जाए सो कल दिन में किसी समय वह शर्मा जी के घर हो आएगी, यह सोच मुख्य फाटक की कुंडी लगा वो घर में आ गई। तब तक उनके पति उठ चुके थे और वॉश बेसिन के सामने खड़े दांत साफ कर रहे थे। उनके बाद मालती ने भी ब्रश कर मुंह धोया, रसोई में जाके चाय बनाई और ट्रे में रखकर ड्राइंग रूम में पति के पास आ बैठी।

'रात तो तुमने बताया नहीं कैसी रही शादी।' प्याला पति की ओर बढ़ाते हुए मालती ने पूछा?

'बहुत शानदार'

'कुछ ना पूछो'

'पंडितों ने दिल खोलकर पैसा लगाया है। क्या तो सजावट थी और खाने की तो इतनी वैरायटी कि चीजों को देखकर ही मन भर जाए।'

चाय की चुस्की लेते हुए उनके पति ने कहा, 'अच्छा और दुल्हन कैसी है?'

'बढ़िया है, बहुत सुंदर, जोड़ी अच्छी है। पवन कौन कम गबरू जवान है।'

'चलो अच्छा है, कल दिन में, मैं भी बहू देख आऊंगी।' मालती ने कहा।

'अरे सुनो।'

'तुम किसी को पकड़कर सबसे पहले घर के सामने पड़ा कचरा उठवाओ। गर्मी का मौसम है, मारे बदबू के चैन नहीं पड़ रहा। ब्याह वाले घर के लोगों की अकल पर तो पत्थर पड़ गए हैं शायद दूसरे के द्वार पर पड़ी गंदगी जैसे उन्हें दिखती ही नहीं। वैसे दिखावे में लाखों रुपए लुटा देंगे पर पड़ोसी के द्वार पर फैलाई गंदगी को उठवाते जोर पड़े हैं इन्हें, अंधे हो जावे हैं शायद,' भुनभुनाते हुए मालती ने कहा।

'दिन तो ठीक से चढ़ने दो, फिर देखता हूं।' कह उनके पति फिर अखबार में गुम हो गए।

इतने में महरी आ गई। मालती उसके साथ व्यस्त हो गई। बच्चों के उठने पर उनसे बतियाते, खाते-पीते कैसे दिन बीत गया पता ही ना चला।

बेटे उनके लाखों में एक थे। मालती का परिवार जाति व्यवस्था के अनुसार निम्नतर पड़ता था।

अगले दिन उठते के साथ मालती जल्दी-जल्दी घर के काम निबटाने लगी। ग्यारह बजे सुबह तक घर के कामों से निबट, तैयार हो, वह बहू को शगुन दे आएगी। मन ही मन उन्होंने तय किया था।

पति बच्चों को आज ऑफिस जाना था तो जल्दी-जल्दी उनके टिफिन और नाश्ता बना वह महरी की राह तकने लगीं। नियत समय पर वो आई।

नहा तो मालती पहले ही चुकी थीं, जब तक यह काम कर रही है तब तक मैं तैयार हो लूं, यह सोच वह बाल संवारने लगी। फिर चेहरे पर क्रीम मली, आंखों में काजल लगाया, माथे पर बिंदी चिपका वह साड़ी बदलने लगीं। शगुन के पैसे लिफाफे में रख छोटे पर्स में डाल वह महरी के काम खत्म होने का इंतजार करने लगीं। इतनी देर में वो बर्तन धो, झाड़ू लगा चुकी थी और अब कमरों में पौंछा लगा रही थी।

'मिथिलेश पंखा चला ले, जल्दी सूख जाएगा!'

'अच्छा बीवी जी' कह मिथिलेश ने पंखे चल दिए।

मिथिलेश के जाते ही मालती ने मुख्य द्वार पर ताला जड़ा और पर्स हाथ में लिए शर्मा जी के घर की ओर चल दी। शर्मा जी का घर गली में दो घर छोड़कर ही था।

शादी वाले घर की गहमागहमी और उल्लास पूरे घर में व्याप्त था। दूर से आए मेहमान अभी विदा नहीं हुए थे। मर्द बैठक में मंडली जमाए थे और वहीं चाय के दौर चल रहे थे। फल के टोकरे, मिठाइयों के डिब्बे इधर-उधर रखे थे। भीतर वाले कमरे में बहू को घेरे हुए स्त्रियों का जमघट था। दूर पास की रिश्तेदारी की स्त्रियां और उनके मोहल्ले की भी चार-पांच पड़ोसिनें भीतर वाले कमरे में मौजूद थीं। उनके कमरे में प्रवेश करते ही सबकी नजरें एक बारगी उन पर पड़ी। पड़ोसिनों ने उन्हें देख हल्की-सी मुस्कान से उनका स्वागत किया। कमरे के बाहर चप्पल उतार वह पड़ोसिनों के ग्रुप में शामिल हो गई।

तभी शर्मा जी की पत्नी ने कमरे में आई।

'बहन जी, बेटे का ब्याह बहुत-बहुत मुबारक हो।'

गर्मजोशी से मालती ने शरमाइन को बधाई दी। अति व्यस्त शरमाइन ने उन्हें देखकर भी अनदेखा-सा किया और अलमारी की ओर बढ़ गई और उसे खोलकर जल्दी-जल्दी कुछ खोजने लगीं !

उनकी बेरुखी से मालती का मन तनिक बुझ-सा गया पर फिर उन्होंने मन को समझाया शादी के इंतजामों और थकान के कारण मेजबान को प्राय: ऐसा हो जाता है।

दुल्हन भारी साड़ी और गहने पहने सजी-धजी बैठी थी। लड़की खासी सुंदर थी। झीनी साड़ी का छोटा-सा घूंघट दुल्हन के मुख पर पड़ा था पड़ोसिनें शगुन का लिफाफा दुल्हन को देने लगीं, उनकी देखा देखी मालती ने भी लिफाफा दुल्हन को पकड़ा दिया और 'दूधो नहाओ पूतो फलों' का आशीर्वाद दिया।

शगुन के बाद अन्य पड़ोसिनों के साथ उसने भी शर्माइन से जाने की इजाजत मांगी तब सास के इशारे पर बहू उठी और मोहल्ले की स्त्रियों के चरण स्पर्श करने लगी। उन समेत मोहल्ले की पांच स्त्रियां वहां मौजूद थी। निकट खड़ी सास की मौजूदगी में दुल्हन बारी-बारी सब स्त्रियों के पैर छूकर आशीर्वाद ले रही थी। मालती के साथ खड़ी गुप्ताइन का पैर छूने के बाद जैसे ही दुल्हन उनके पैर छूने की खातिर उनकी और बढ़ी सामने खड़ी शर्माइन ने आंखों ही आंखों में दुल्हन को उनके पैर न छूने का इशारा किया।

चरण स्पर्श के लिए उनकी ओर बढ़ते दुल्हन के कदम एक पल को ठिठक गए फिर दूसरी ओर खड़ी महिला की ओर बढ़ गए। उसके पैर छू वह अपनी पायल छनकाती और साड़ी संभालती अपने स्थान पर जा बैठी। सन्न खड़ी मालती के शुभ आशीष मालती के कंठ में ही अटके रह गए। एक पल को वह अवाक रह गई पर अगले ही पल सब माजरा समझ गई। इस बीच साथ खड़ी पड़ोसिनों के चेहरे अर्थपूर्ण मुस्कानों से खिल गए। मालती अपमान से दग्ध हो उठी।

'क्या हुआ अनुज की मम्मी, कल तुम बारात में ना दिखाई दीं भाई साहब तो थे पर तुम क्यों नहीं आई।' दूसरी गली में रहने वाली एक स्त्री उन्हें समीप पा पूछ रही थी।

'मेरे घुटनों में बहुत दर्द था इसलिए ना आ सकी बंटी की मम्मी, और बच्चों को छुट्टी ना मिली, पर पड़ोस का मामला था सो बारात में शामिल होने के लिए अनुज के पापा को मैंने भेज दिया था। अब सोचा बेटे के ब्याह की बधाई भी दे आऊं और बहू भी

देख आऊं।' मालती ने जवाब दिया '–बहुत अच्छा किया बहन जी और नहीं तो क्या पड़ोस में तो आना-जाना ही चाहिए।'

मालती उस स्त्री से औपचारिक बातचीत तो कर रहीं थी पर मन उनका हाल के घटनाक्रम से बहुत क्षुब्ध था।

हंगामा खड़ा करने का उनका कोई मकसद न था किंतु एकदम चुप्पी साधना भी उन्हें अनुचित लग रहा था। शर्माइन के दोगले व्यवहार का उसे एहसास कराना जरूरी था और कुछ देर बाद उन्हें मौका भी मिल गया।

कुछ सामान निकालने के लिए शर्माइन स्टोर की ओर जाती हुई दिखी उसे पता था कि इस घर का स्टोर पीछे की तरफ कुछ आड़ में है वह भी शर्माइन के पीछे हो लीं! शर्माइन अपनी धुन में इतनी व्यस्त थी कि उनके आने का उसे तनिक भी आभास ना हुआ।

स्टोर में पहुंचते ही मालती तनिक रोष से बोली, 'क्यों बहन जी, मुझ में के कांटे लगे थे जो मेरे पैर छूने से बहू को तुमने रोक दिया। चार लोगों में म्हारी बेज्यती करके तुम्हें क्या मिला।'

मालती की तिलमिलाहट चरम पर थी, शर्माइन को इस अप्रत्याशित वार की अपेक्षा न थी। उसे कुछ न सूझा कि क्या कहे सो अनजान बनने का नाटक करती हुई हकला कर बोली, 'अरे क्या हुआ? क्यों नाराज हो रही हो इतना?'

किंतु उसका फक पड़ा हुआ चेहरा और लड़खड़ाती जुबान सारा भेद खोल दे रही थी।,'सब जानती हो, सब पता है तुम्हें कि क्या हुआ है!' 'घर बुलाकर बेज्जती करना क्या अच्छी बात है।'

इतना कह मालती अपने घर लौट आई, पर आते-आते उसके मन का गुब्बार फूट ही पड़ा, वह बोली, 'जो कूड़ा और गंदगी तुमने मेरे द्वार पर बिखेरी है उसे इसी दम उठवाओ वरना पुलिस और नगर निगम में फोन कराती हूं।

'हलवाई मेरे द्वार के सामने बिठाते तो ध्यान ना आया होगा कि किसका घर है और बहू से पैर छुवाते...।' कहकर मालती जा चुकी थी, पर पीछे रह गई शर्माइन को एक नई चिंता दे गई, उसे कुछ ना सूझा कि क्या जवाब दें। कहीं यह शैतान की खाला सच में ही पुलिस ना बुला ले। लड़कों से कहती हूँ, जल्दी से कूड़ा उठवाने की व्यवस्था करें। बेटे के ब्याह के अवसर पर घर-गाँव से आए रिश्तेदारों के बीच उन्हें कोई बखेड़ा नहीं पैदा करना।❑

**पृष्ठ सं. 19 का शेष भाग**

हुआ।'

मैंने हैरत के साथ कहा, 'सर आपने ऊपर रूम नंबर सात में आकर नहीं देखा कि मैं क्लास ले रही हूँ। बिना देखे आप कैसे कह रहे हैं कि मैंने क्लास नहीं लिया? मैंने समय पर क्लास में जाकर पीरियड लिया।

सर अपनी बात रखने के लिए कहने लगे, 'आप रोज ही लेट आती हो, आपका क्लास नहीं होता है।' फिर तो मुझे बहुत गुस्सा आ गया , मैं भूल गई कि वे अधिकारी है, मैं गुस्से में जोर से बोली, 'सर आप हमेशा मुझे ऐसा कहते हैं, प्राचार्य जी से मेरी झूठी शिकायत करते हैं। आप मेरे साथ ही ऐसा क्यों करते हैं? आप मेरे साथ भेदभाव करते हैं, मेरे साथ जातिभेद मानते हैं। मुझे जानबूझकर परेशान करते हैं?'

जब बोलना शुरू किया तो आवेश बढ़ता गया, मगर होशोहवास दुरुस्त थे। मैंने सोचा जब इतना बोल ही दिया है तो बाकी का भी बोल देना चाहिए, जो होगा, देखा जायेगा, आफिस के चपरासी बाबू प्राध्यापक सभी की भीड़ लग गई थी। सभी पूछ रहे थे, 'क्या हुआ? क्या हुआ?' सर को गुस्से के साथ देखते हुए मैंने जोर से कहा, 'सर! ये आपका कॉलेज नहीं है, आप यहाँ के मालिक नहीं हो। आपसे बड़े भी कोई हैं। मैं उनके पास जाऊंगी। उनके पास जाकर आपकी शिकायत करूंगी कि आप मेरे साथ भेदभाव, जातिभेद करते हैं। मैं प्रिंसिपल से कहूंगी। मैं मैनेजमेंट से जाकर कहूंगी कि आप यहाँ मेरे साथ अन्याय करते हैं। मुझे जानबूझकर परेशान करते हैं।' ऑफिस में सारे लोग चुप थे, सुपरवायजर सर बगलें झांकने लगे थे। मैंने अपनी बात खत्म की और ऊपर स्टाफ रूम में आ गई।

तबसे सुपरवायजर सर मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करने लगे थे। वे मेरे साथ हमेशा सम्मान के साथ बातें करते। मेरे घर परिवार के विषय में कुशलक्षेम पूछते रहते थे। मगर आज कुटिलतावश वे पुनः वैसी ही बातें कर रहे थे।

सर ने अपनी बात दोहराते हुए, एक बार फिर कहा, 'मैडम देखना, एक दिन लोग जातपांत को भूल जायेंगे।' यह सुनते ही मैंने ऊंची आवाज में कहा, 'सर, कार रुकवाइए।' उनकी इन बातों को सुनकर मुझे फिर से गुस्सा आने लगा। उनके चेहरे पर मुझे वही पुरानी कुटिल मुस्कान दिखाई दी। कार धीरे-धीरे पेट्रोल पंप के पास जाकर रुकी।❑